चन्द्रहास

चन्द्रहास

लेखिका
लज्जावती

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क : दिल्ली

प्रथम संस्करण
मार्च, १९५८

•

मूल्य
आठ आने
(५० नए पैसे)

•

चित्रकार
आर्यन

•

प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली

•

मुद्रक
बालकृष्ण एम० ए०
युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली

क्रम

		पृष्ठ
बचपन	...	५
भाग्य का खेल	...	१०
जाको राखे साइयां	...	१७
भिखारी से राजा	...	२०
नीच न छोड़े नीचता	...	२३
विष से विषया	...	२७
सोचा था क्या, क्या हो गया	...	३२

चन्द्रहास

बचपन

सदियों पुरानी बात है। दक्षिण भारत के केरल प्रदेश में मेधावी नाम का एक राजा था। वह बड़ा न्यायकारी, दयालु और प्रजा की पुत्र की तरह पालना करने वाला था। उसका एक ही पुत्र था—चन्द्रहास। जब चन्द्रहास का जन्म हुआ तो उसके एक पाँव में छः अंगुलियाँ थीं। तब पाँव में छः अंगुलियाँ होना अच्छा नहीं समझा जाता था। इसलिये उसके माता-पिता—राजा-रानी—बहुत चिन्तित हुए। घर के दूसरे लोगों ने भी इस छठी अंगुली को अशुभ माना। चन्द्रहास के जन्म से किसी को भी प्रसन्नता नहीं थी।

राजा ने बड़े-बड़े नामी ज्योतिषियों को बुलाकर बालक की जन्मपत्री बनाने को कहा। ज्योतिषियों ने लग्न शोधकर—ग्रह-नक्षत्र-राशि देखकर और विचार करके बताया कि इस बालक के जन्म लेने से कुछ समय बाद राज्य पर कोई बड़ी विपत्ति आएगी। पर साथ

ही यह भी कहा कि यह बालक भगवान् का बड़ा भक्त होगा। इसका तेज और प्रताप चारों दिशाओं में फैलेगा। इसके भाग्य में तीन-तीन राज्यों का स्वामी होना लिखा है।

चन्द्रहास अभी तीन वर्ष का भी नहीं हुआ था कि केरल देश पर एक शत्रु राजा ने चढ़ाई कर दी। राजा मेधावी बड़ा शूर-वीर था। वह भी अपनी सेना लेकर लड़ाई के मैदान में जा कूदा। तलवार से तलवार बजने लगी। बड़ी ही घमासान लड़ाई हुई। शत्रु भी राजा मेधावी की वीरता की मन ही मन प्रशंसा करने लगे।

किन्तु ग्रह-दशा कहिये, चन्द्रहास के जन्म का बुरा प्रभाव कहिये या शत्रु की सेना की अधिकता कहिये, अन्त में मेधावी की लड़ते-लड़ते मृत्यु हो गई और शत्रु जीत गया। मेधावी की सेना के सब बड़े-बड़े अधिकारी मारे जा चुके थे। बेचारी विधवा रानी ने भी अब जीना बेकार समझा। उसने दुधमुँहे चन्द्रहास को, उसकी धाय को सौंपते हुए कहा—"धाय, मैं अब सती होती हूँ। हमारे कुल का दीपक चन्द्रहास अब तुम्हारे हवाले है। इसे तुम अपना ही पुत्र समझ कर पालना और इसकी रक्षा करना। अपने कलेजे के टुकड़े को

तुम्हारी गोद में देकर शान्ति से मर सकूंगी। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम इसके लिये कुछ उठा न रखोगी।"

आँसू बहाती धाय ने उस चाँद जैसे चन्द्रहास को अपनी गोद में ले लिया। उसने रानी को विश्वास दिलाया कि मैं चन्द्रहास को अपने प्राणों से भी बढ़कर समझूंगी। आप इसकी किसी प्रकार की चिन्ता न करें। अपने जीते जी मैं इसका बाल भी बांका न होने दूँगी।

रानी ने सन्तोष की सांस ली। चन्द्रहास की ओर से वह निश्चिन्त हो गई। मेधावी की चिता तैयार हो

चुकी थी। रानी भी उसी चिता में बैठकर सती हो गई। ज्योतिषियों की बात सच होकर रही। राजा मेधावी का राज्य छिन गया, कुल-नाश हो गया।

बेचारी धाय चन्द्रहास को गोद में उठाए लुकती-छिपती कुन्तलपुर नामक नगर में जा पहुँची। वहाँ वे दोनों मारे-मारे गली-कूचों में फिरते और जो कुछ मिल जाता उसे खा लेते। रात को किसी धर्मशाला में सो रहते। इसी तरह उनके दुःख के दिन कटने लगे।

एक बार कुन्तलपुर राज्य के प्रधान मंत्री धृष्टबुद्धि की नजर बालक चन्द्रहास पर पड़ी। चन्द्रहास के राजकुमारों जैसे चेहरे को देखकर मंत्री बहुत प्रभावित हुआ और धाय को उसकी माता जानकर दोनों को अपने भवन में ले आया।

धाय मन्त्री के घर का काम-काज करने लगी। काम-काज से निपट कर उसे कुछ समय मिलता तो चन्द्रहास को लेकर मन्दिर में जाती। भगवान् का भजन-पूजन कर उसके मन को कुछ सन्तोष होता। बालक चन्द्रहास भी खुशी-खुशी मन्दिर जाता, मन लगाकर भगवान् का नाम कीर्तन सुनता। इसी प्रकार उनके दिन बीतने लगे और चन्द्रहास की अवस्था छः वर्ष की हो गई।

एक दिन धृष्टबुद्धि के घर ब्राह्मण-भोजन था। बड़े-बड़े विद्वान् ब्राह्मण बुलाए गए थे। उन ब्राह्मणों ने जब चाँद जैसे चन्द्रहास को देखा, तो वे मन-ही-मन सोचने लगे कि यह राजकुमार जैसा लड़का कौन है ? उसकी बात-चीत, चाल-ढाल और रंग-ढंग से वह होनहार बालक दिखाई देता था।

भोजन समाप्त हुआ। ब्राह्मण-मण्डली बैठकर बातचीत करने लगी तो धृष्टबुद्धि ने उनसे पूछा कि महाराज, कृपा करके यह तो बताइये कि मेरी पुत्री विषया को कैसा वर मिलेगा ?

चन्द्रहास के राजसी लक्षणों और विषया के समान ही अवस्था के कारण ब्राह्मणों ने कहा कि यह बालक आपकी कन्या के योग्य वर है। आपको दूर खोजने जाने की क्या आवश्यकता है। हमारे विचार में तो आपकी विषया का विवाह इसी के साथ होना चाहिये।

पर मंत्री जी को तो यह बात बहुत ही बुरी लगी। उसने मन-ही-मन सोचा—कहाँ तो मेरी बेटी, राजसी ठाट-बाट में पली और कहाँ यह गली-गली घूमने वाला बालक। भला यह भी कोई सम्बन्ध हुआ। विवाह, वैर और प्रीति तो अपने जैसों से ही होनी चाहिए। उसने ब्राह्मणों-ज्योतिषियों से कुछ नहीं कहा और उन्हें दक्षिणा देकर विदा किया।

भाग्य का खेल

कई दिनों बाद कुन्तलपुर के राजा ने एक बड़ा यज्ञ करना शुरू किया। दूर-दूर से ब्राह्मण और ऋषि-मुनि बुलाए गए। खूब दान-दक्षिणा बंटी। यज्ञ की पूर्णाहुति डल गई। राजा ने विद्वानों और ऋषि-मुनियों के पांव छुए, अपने हाथ से दक्षिणा दी और यज्ञ में पधारने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। एक-एक कर सब विदा होने लगे।

संयोग की बात कि इसी समय राजा के महलों के पास बाल-गोपालों की एक टोली भजन-कीर्त्तन करती हुई निकली। उनके स्वर में कुछ ऐसी मिठास थी, कि राह चलते लोग सुनने खड़े हो जाते।

इस टोली में सबसे आगे चन्द्रहास ही था। उसके गोरे मुँह को देखकर और भक्ति की मिठास से भरे स्वर को सुनकर तो जी करता था कि इस बालक को

गोदी में उठालें। राजा ने भी यह सब कुछ देखा-सुना।

राजा ने सोचा शायद यह बालक मुझसे कुछ चाहते हैं। उसने टोली के मुखिया चन्द्रहास से पूछा—"बच्चे! तुम क्या चाहते हो?"

चन्द्रहास ने जवाब दिया—"हमें तो कुछ चाहिये नहीं। हम तो प्रभु-गुण ग ते इस तरफ़ आ गए थे।"

बालक का यह जवाब सुनकर सभी वाह! वाह!! कर उठे। राजपुरोहित गालव मुनि उस समय वहीं थे। वे बालक चन्द्रहास के जवाब से और उसकी चाल-ढाल से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरा और बड़े स्नेह से आशीर्वाद दिया कि बेटा तुम्हारी उमर लम्बी हो और तुम्हें सुख मिले।

चन्द्रहास ने उनके चरणों पर माथा टेकते हुए कहा—"महाराज, ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि मैं भगवान् को कभी न भूलूँ।"

मुनि बोले—बेटा, मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि इस छोटी उमर में ही तुम्हारा मन प्रभु-भक्ति में रम गया है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारा मन सदा भगवान् की भक्ति में लगा रहे।"

चन्द्रहास ने दोबारा मुनि के चरणों में सिर झुका

दिया। गालव मुनि ने चन्द्रहास को बड़े ध्यान से सिर से पैरों तक देखा। उसके शरीर की बनावट और लक्षणों से ऐसा मालूम होता था कि यह बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा।

गालव मुनि ने पास खड़े राजा से कहा—"राजन्, मेरे विचार में यह बालक किसी राजकुल का है। इसके सारे लक्षण चक्रवर्तियों जैसे हैं। आपके कोई पुत्र नहीं है। इसलिए मेरे विचार में तो आप इस बालक की पढ़ाई और पालन का प्रबन्ध कर दें। जब यह पढ़-लिखकर सब तरह से योग्य हो जाएगा तो अपनी पुत्री राजकुमारी चम्पकमालिनी से इसका विवाह कर देना और राज्य का उत्तराधिकारी भी इसे ही बना देना।"

राजा ने मन में सोचा कि न तो इसके कुल-वंश का कुछ पता है और न माता-पिता का ही। पर अजीब बात है कि मुनि महाराज फिर भी ऐसी बात कह रहे हैं। खैर, कोई बात नहीं। इस बालक से ही इसके माता-पिता और कुल की बात पूछते हैं।

राजा ने पूछा—"बेटा, तुम्हारे माता-पिता कौन हैं और कहाँ हैं?"

चन्द्रहास बोला—"यह सब मुझे मालूम नहीं। मैं तो केवल अपनी मां को जानता हूँ। वे मन्त्री जी के

घर पर काम करती है और वहीं रहती भी है। मुझे इतना ही मालूम है।"

यह सुनकर गालव मुनि ने राजा से कहा—"राजन् ! यह बालक दासी का कभी नहीं हो सकता। हो सकता है, वह इसकी धाय हो। ठीक तो यह होगा कि उसे बुलाकर पूछा जाए।"

मंत्री की दासी, चन्द्रहास की धाय को बुलाकर राजा ने पूछा तो उसे विश्वास हो गया कि पुरोहित जी जो कुछ कह रहे हैं, वही ठीक है।

राजा ने इस काम में देर करना ठीक नहीं समझा और उसी समय गालव मुनि से प्रार्थना की कि इसे पढ़ाने-लिखाने की जिम्मेदारी आप अपने ऊपर लें। मुनि जी ने यह बात स्वीकार कर ली।

ज्योंही मुनि जी बालक को अपने साथ लेकर चलने लगे, त्योंही राजकुमारी चम्पकमालिनी वहाँ आ निकली।

उसने देखा कि मुनि जी इस बालक को अपने साथ लिये जा रहे हैं। राजकुमारी ने मुनि जी से कहा—"इसे आप मत ले जाइये। हम मिलकर खेला करेंगे।" और वह चन्द्रहास का हाथ पकड़कर एक ओर चली गई। वे आपस में खेलने लगे।

जब गालव मुनि और राजा में ऊपर की बातें हो रही थीं तो मंत्री धृष्टबुद्धि मेहमानों की विदाई के काम में लगा हुआ था। इसलिए उसकी सलाह के बगैर ही यह सब तय हो गया था। जब थोड़ी देर बाद उसे पता लगा तो उसके पांवों के नीचे से जमीन सरक गई। उसे अपने मनसूबे मिट्टी में मिलते दिखाई देने लगे।

बात यह थी कि कुन्तलपुर का राजा बड़ा धर्मात्मा था। उसके कोई पुत्र नहीं था। एक कन्या थी—चम्पकमालिनी। अपने गुरु और पुरोहित गालव

मुनि के उपदेश के कारण वह भजन-पूजन में लगे रहते थे। राज-काज सारा मंत्री धृष्टबुद्धि के हाथ में था। मंत्री के दो पुत्र मदन और अमल तथा एक कन्या थी विषया। उसने मन में सोच रखा था कि राजा के कोई पुत्र तो है नहीं। एक कन्या जरूर है, उसका ब्याह मैं अपने बेटे मदन के साथ करने के लिए राजा को मना लूंगा। इस तरह राज्य का उत्तराधिकारी मेरा बेटा बन जाएगा। पर चन्द्रहास को राजा ने गोद लेने का जो निश्चय किया, उससे मंत्री की सोची हुई योजना बेकार हो गई।

उसने मन में निश्चय किया कि मैं अपनी राह के रोड़े इस चन्द्रहास को मरवाकर ही दम लूंगा।

फिर सोचा कि अगर यह मामला राजा को समझा-बुझाकर तय हो सके तो भी ठीक होगा। यह सोच वह राजा का मन चन्द्रहास से फेरने के लिए तरह-तरह की बातें बनाने लगा, पर राजा पर कुछ भी तो असर नहीं हुआ। फिर उसके मन में आया कि गालव मुनि जी के कहने से ही राजा ने यह निश्चय किया है; इसलिए उन्हीं का मन फेरा जाए। और वह मुनि गालव के आश्रम में जा पहुँचा। पहले तो इधर-उधर की बातें होती रहीं। फिर चन्द्रहास की

बात छिड़ी। मुनि जी ने कहा—"मंत्री जी, यह बालक बड़े ही शुभ लक्षणों वाला है। इसमें चक्रवर्ती के पूरे-पूरे लक्षण मुझे दिखाई देते हैं। राजा जी ने उसे अपनाकर बहुत ही अच्छा किया। और राजा जी ने यह भी तय कर लिया है कि राजकुमारी का ब्याह भी उसी के साथ करेंगे।"

मंत्री ने कहा—"मुनि महाराज, मुझे तो यह बात कतई नहीं जँचती। जिसके कुल और शील का पता न हो, शास्त्र तो उसे एक रात भी घर पर ठहराने की आज्ञा नहीं देते। ऐसे आदमी को राज्य और राजकुमारी देने की बात मैं तो नहीं कह सकता। आप ठहरे महात्मा पुरुष। आपकी बात दूसरी है।"

पर मुनि जी ने कहा—"मंत्री जी, आप भी कैसी बात करते हैं। महाराज तो इस सब का निश्चय कर चुके हैं।"

यहाँ भी मंत्री को अपनी दाल गलती नजर नहीं आई। पर वह अपने मन के भाव को छिपाकर, यह कहकर वापस आ गया कि महाराज ने और आपने मिलकर जो तय किया है, भला मैं उसका विरोध कैसे कर सकता हूँ। राज्य और राजकुमारी महाराज की हैं। वे जिसे चाहें दें।

अब उसके सामने एक ही मार्ग था कि किसी तरह चन्द्रहास को मरवा डाला जाए। और उसका तरीका सोचते भी उसे देर नहीं लगी।

चन्द्रहास बालकों में खेल-कूद रहा था। इसी समय मंत्री ने एक बालक को भेजा और कहा कि चन्द्रहास को बुला लाओ।

चन्द्रहास बुलावा पाते ही चलने लगा पर दूसरे बालक इस अच्छे साथी को छोड़ना नहीं चाहते थे। वे उसे जाने के लिए मना करने लगे। आखिर किसी तरह समझा-बुझाकर उन्हें मनाया। तब उन्होंने चन्द्रहास को जाने दिया।

मंत्री धृष्टबुद्धि ने चन्द्रहास को मरवाने की पूरी तैयारी कर रखी थी। एक विश्वासी हत्यारे को बुला कर, चन्द्रहास को मारने का काम सौंपा गया और

बदले में उसे खूब इनाम देने का वायदा किया और इस बात का सबूत लाने को भी कहा कि सचमुच चन्द्रहास को मार डाला गया है।

चन्द्रहास के मंत्री के महल में पहुँचते ही हत्यारा उसे दूसरों की नजरों से बचाकर एक घने जंगल में ले गया। जब हत्यारे ने उसका सिर काटने के लिए तलवार निकाली तो चन्द्रहास ने उससे कहा—"पहले मुझे भगवान् की प्रार्थना कर लेने दो फिर तुम बड़ी खुशी से मेरा सिर काट सकते हो। चन्द्रहास प्रार्थना करने लगा और हत्यारा यह सब देखता रहा। भगवान्

की कृपा से हत्यारे के मन में दया आ गई। एक निरपराध भोले बालक को मारना उसे अच्छा नहीं लगा। पर मंत्री ने तो कुछ निशानी मांगी हुई थी। चन्द्रहास के एक पाँव में छः अंगुलियाँ थीं। हत्यारे ने निशान के लिए छठी उंगली काट ली और चन्द्रहास को अकेला उसी जंगल में छोड़कर वापस आ गया।

अंगुली कटने से चन्द्रहास को खूब दर्द हुआ पर चन्द्रहास तो भगवान् का भक्त था। वह उसी का नाम जपने लगा।

भगवान् की लीला बड़ी विचित्र है। उसके हाथ बड़े लम्बे हैं और 'जाको राखे साइयां मार सके न कोय' वाली बात सभी जानते हैं।

भिखारी से राजा

कुन्तलपुर राज्य के अधीन एक छोटी-सी रियासत थी चन्दनपुर। यह जंगल उसी रियासत में पड़ता था। उस रियासत का राजा कुलिन्दक उस दिन घोड़े पर सवार होकर, इसी जंगल में शिकार खेलने आया था। इस घोर वन में उसने जब सुना कि कोई ऊँचे स्वर में भगवान् का नाम कीर्तन गा रहा है तो वह वहां आ पहुँचा। कुलिन्दक के कोई सन्तान नहीं थी। बालक चन्द्रहास को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि भगवान् ने ही कृपा करके यह बालक मुझे दिया है। उसने चन्द्रहास को गोद में उठा लिया। उसके पाँव से अब भी खून बह रहा था। राजा ने पाँव पर पट्टी बांधी और बालक को अपने साथ घोड़े पर बिठाकर महल में लौट आया।

रानी ने जब चन्द्रहास को देखा तो उसके मन में

मां की ममता जाग उठी। वह चन्द्रहास को पाकर फूली न समाई।

राजा-रानी ने निश्चय किया कि हम इस बालक को गोद लेंगे और राज्य का उत्तराधिकारी बनाएंगे। गोद लेने की पूरी तैयारी होने लगी। इस काम के लिए राजा ने खास तौर पर राजसभा बुलाई। और सभा में कहा—यह बालक मुझे जंगल में मिला है। आप सब जानते ही हैं कि मैं अभागा सन्तान-हीन हूं। अगर सभा इजाजत दे तो इस बालक को गोद ले लूं और योग्य होने पर इसे राज्य का उत्तराधिकारी बनाऊं।"

सभी दरबारियों ने राजा के इस प्रस्ताव को प्रसन्नता पूर्वक मान लिया। फिर क्या था। बड़े ठाट-बाट से राजा ने चन्द्रहास को गोद लिया और ब्राह्मणों को दिल खोलकर दान-दक्षिणा दी। दीन-दुखियों को भी खूब धन बांटा।

अब ढंग से चन्द्रहास की पढ़ाई-लिखाई शुरू हुई। जहां दिनों-दिन उसकी अवस्था बढ़ने लगी और शरीर भरने लगा, वहां विद्या और बुद्धि में भी उसने खूब उन्नति की। राजकुमारों के योग्य सभी विद्याएं उसने सीख लीं। शास्त्रों के साथ-साथ शस्त्रों की विद्या में भी उसने कमाल हासिल किया। धनुष-बाण चलाने

में वह अपना सानी नहीं रखता था। घुड़-सवार भी कमाल का था। तलवार चलाने में वह एक ही था। पर उसे घमण्ड रत्ती भर भी न था। वह सब के साथ मीठा बोलता और नम्रता का बरताव करता था। उसके रहन-सहन और बात-व्यवहार से क्या अमीर और क्या गरीब सभी प्रसन्न थे। अब धीरे-धीरे उसने राज-काज भी संभालना शुरू कर दिया। उसे सब तरह से योग्य जानकर राजा कुलिन्दक ने उसे युवराज बना दिया और स्वयं भगवान् के भजन-पूजन में दिन बिताने लगा। अब राजा कुलिन्दक राज-काज से पूरी तरह निश्चिन्त था। चन्द्रहास ही अब चन्दनपुर का राजा था।

नीच न छोड़े नीचता

चन्दनपुर रियासत क्योंकि कुन्तलपुर राज्य के अधीन थी, इसलिए कर के रूप में प्रति वर्ष दस हज़ार मोहरें कुन्तलपुर के राजा को देती थी। इस वर्ष दस हज़ार मोहरें भेजने में कुछ देर हो गई थी। इसलिए मंत्री धृष्टबुद्धि ने चन्दनपुर के राजा कुलिन्दक के विरुद्ध, अपने राजा के कान भरने शुरू किये। राजा ने सब राज-काज मंत्री पर छोड़ रखा था। इसलिये भी उसे मनमानी करने में देर नहीं लगी। दूसरी बात यह थी कि मंत्री धृष्टबुद्धि चन्दनपुर के राज को भी हड़प जाने को मन में सोचे बैठा था। क्योंकि चन्दनपुर के राजा की कोई सन्तान तो थी नहीं। पर जब से उसे यह मालूम हुआ था कि चन्दनपुर के राजा ने एक बालक को गोद ले लिया है और उसे युवराज भी बना दिया है, तब से वह मन ही मन कुढ़ा करता

था। अब उसे बदला लेने का अच्छा मौका मिल गया। उसने तय किया कि पूरी फौज लेकर वह खुद चन्दनपुर जाएगा। और अगर राजा कुलिन्दक ने कर देने में जरा भी आनाकानी की तो उसे कैदकर, राज्य पर अधिकार कर लेगा।

राजा कुलिन्दक को जब पता लगा कि मंत्री धृष्ट-बुद्धि फौज लेकर आ रहा है तो वह उसकी अगवानी के लिए अपने दरबारियों के साथ गया और बड़े आदर से उसे ले आया। आवभगत में कोई कोर-कसर नहीं रखी। कर की दस हजार मोहरों के साथ और भी बहुत-सी भेंट दी।

राजा कुलिन्दक ने युवराज का परिचय मंत्री जी से कराया। और बड़ी नम्रता से कहा कि अब यही इस राज्य का उत्तराधिकारी है। जैसी कृपा दृष्टि आपकी मुझ पर थी, वैसी ही इस पर रखें।

फिर जब धृष्टबुद्धि ने युवराज के जंगल में मिलने की कहानी सुनी तो सन्न रह गया। उसे निश्चय हो गया कि यह तो वही मेरा वैरी चन्द्रहास है।

उसे ज्योतिषियों की बात याद आई। फिर मुनि गालव ने जो कुछ कहा था, उसका ध्यान आया। उसे लगा कि उन्होंने जो कुछ कहा था वही होने वाला

है। पर वह भी अपनी जिद का पक्का था। इतनी आसानी से वह हार मानने वाला नहीं था। उसने एक बार फिर तय किया कि इसे जीवित नहीं छोड़ने का। इसके लिए उसने एक तरकीब भी सोच निकाली।

उसने बड़े रोब से राजा कुलिन्दक को कहा—"आपने हमारे महाराज की आज्ञा के बिना ऐसा क्यों किया। यह सब कुछ करने से पहले आपको महाराज की आज्ञा अवश्य लेनी चाहिये थी। पर खैर। जो कुछ होना था, वह तो हो गया। अब आप युवराज को तुरन्त महाराज के पास भेजें ताकि वह अपने उत्तराधिकारी होने की स्वीकृति महाराज से प्राप्त कर सके। पर इस काम में अब जरा भी देरी नहीं होनी चाहिए।"

कुलिन्दक ने सोचा, बात तो ठीक है। इस बहाने ही चन्द्रहास महाराज से भेंट कर आएगा। महाराज तो सन्त स्वभाव के हैं। उन्हें इसे उत्तराधिकारी मानने में क्या आपत्ति हो सकती है।

उसने मन्त्री से कहा—"मैं अभी चन्द्रहास को महाराज के पास जाने की आज्ञा देता हूँ। मुझसे अनजाने जो यह भूल हुई, उसके लिए क्षमा करें।"

धृष्टबुद्धि चाहता था कि चन्द्रहास किसी तरह कुन्तलपुर पहुँच जाए। फिर इसे ठिकाने लगाना कोई कठिन काम नहीं होगा।

जब चन्द्रहास कुन्तलपुर जाने के लिए तैयार होकर आया तो धृष्टबुद्धि ने एक लिफाफा उसके हाथ में थमाते हुए कहा—"यह बहुत ही आवश्यक पत्र है। यह रास्ते में खुलने न पाए और मेरे बेटे मदन के सिवा किसी दूसरे के हाथ में न जाए।"

चन्दनपुर से कुन्तलपुर कोई चौबीस कोस दूर था। चन्द्रहास पत्र लेकर, घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा।

विष से विषया

चन्द्रहास ने घोड़े को एड़ लगाई और तेजी से कुन्तलपुर की ओर बढ़ चला। कोई तीसरे पहर वह कुन्तलपुर नगर की हद में पहुँच गया।

नगर से बाहर बड़ा सुन्दर बाग था। चन्द्रहास ने कुछ देर यहां सुस्ताने का निश्चय किया। बाग के बीचों-बीच एक तालाब था। यहां चन्द्रहास ने घोड़े को पानी पिलाया और एक छायादार वृक्ष के नीचे बांध दिया। फिर खुद हाथ-मुँह धोकर पानी पिया और थकान दूर करने के लिए एक पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर लेट गया। दिन भर की थकान तो थी ही बाग की ठंडी हवा के झोंकों में उसे शीघ्र ही गहरी नींद आ गई।

संयोग की बात, राजकुमारी चम्पकमालिनी और मन्त्री की कन्या विषया अपनी सहेलियों के साथ इस बाग

में घूमने-फिरने निकली थीं। विषया अपनी सहेलियों से बिछुड़ कर टहलती-फिरती वहीं आ निकली जहां राजकुमार चन्द्रहास पेड़ के नीचे पड़ा सो रहा था। चन्द्रहास की मोहनी सूरत देखकर विषया का मन मोहित हो गया। उसने सोचा, यदि मुझे ऐसा पति मिले तो जीवन धन्य हो जाए। वह उसकी सूरत पर ऐसी मोहित हुई कि उसका मन वहां से हटने को नहीं करता था। वह देर तक उसे एक-टक निहारती रही। उसने सोचा कि इसके नाम-धाम का पता कैसे लगाऊँ। इतने में उसकी नज़र लिफाफे पर पड़ी। उसने

चुपके से जेब से लिफाफा निकाल लिया और खोलकर पढ़ने लगी। उसमें लिखा था :

स्वस्ति श्री प्रिय पुत्र मदन देखत यह पाती।
विष दे देना जिस से हो मम शीतल छाती॥

विषया सोचने लगी इस रूपवान् और गुणवान् राजकुमार को पिताजी भला विष क्यों देना चाहेंगे। अवश्य वे इस राजकुमार से मेरा ब्याह करना चाहते होंगे। भूल से विषया लिखते समय 'या' अक्षर छूट गया होगा जिस से 'विष' बन गया। पर यहां बाग में वह इस भूल को सुधारे तो कैसे ? देर करने का भी समय नहीं था। अगर राजकुमार की नींद खुल गई या सहेलियों ने देख लिया तो वे क्या कहेंगी।

इतने में उसे एक उपाय सूझ गया। उसने अपनी आंख के काजल से 'विष' के आगे 'या' जोड़ दिया जिससे 'विष' का 'विषया' बन गया। अब तो पत्र का अर्थ और का और हो गया। विषया मंत्री की पुत्री का नाम था। पत्र का मतलब हुआ कि विषया का ब्याह इस राजकुमार से कर देना। और इस काम में देरी न करना।

उसने पत्र फिर सावधानी से वैसे ही बन्द किया और राजकुमार की जेब में डाल दिया। फिर प्यासी आँखों से उसे एक नजर देखकर वहां से खिसक गई और सहेलियों में जा मिली।

जब दिन डूबने लगा तो चन्द्रहास उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ-मुँह धोए और सज-संवर कर घोड़े की पीठ पर सवार होकर मंत्री के महल में जा पहुँचा। मदन से भेंट होने पर उसने मंत्री का पत्र जेब से निकालकर दे दिया।

मदन ने पत्र पढ़ा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह पत्र उसने अपनी मां को दिखाया। मां ने जब चन्द्रहास को देखा तो वह भी बहुत खुश हुई। भला कन्या के लिए ऐसा योग्य वर मिलना कोई आसान बात थी?

मां-बेटे दोनों ने ज्योतिषी को बुलाकर मुहूर्त निकलवाया और दूसरे दिन संध्या को विवाह होना निश्चित हो गया। मां-बेटे दोनों साज-सामान जुटाने में लग गए।

विषया के विवाह का समाचार एक-दम सारे नगर में फैल गया। वर राजा को देखने वालों की महल में भीड़ लग गई। जो देखता वही विषया के भाग्य को

सराहता। सहेलियां तो भीतर ही भीतर ईर्ष्या भी करने लगीं।

मंत्री की बेटी के विवाह के लिए राजा ने बहुत धन दिया। नगर-निवासी भी अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार भेंट लेकर आए। बड़ी शान और धूम-धमाके के साथ चन्द्रहास और विषया का ब्याह हो गया।

सोचा था क्या, क्या हो गया

धृष्टबुद्धि तीन दिन बाद चन्दनपुर से वापस लौटा। यहाँ आकर उसने कुछ और ही रंग-ढंग देखा। 'मेरे मन कछु और थो, विधिना के कछु और'। क्या सोचा था और क्या हो गया। पर वह अब भी हार मानने को तैयार नहीं था। उसने निश्चय किया कि बेटी भले ही विधवा हो जाए पर चन्द्रहास को जीवित नहीं छोड़ूंगा।

नगर से दूर एकान्त पहाड़ी पर देवी का मन्दिर था। धृष्टबुद्धि ने वहाँ एक हत्यारे को यह आज्ञा देकर बिठा दिया कि जो भी शाम को यहां आए, उस का सिर धड़ से अलग कर देना। इधर चन्द्रहास से उसने कहा—"हमारे कुल की रीत है कि विवाह के बाद वर अकेला देवी के मन्दिर में जाकर भेंट चढ़ाता है। इसलिये तुम आज शाम को देवी के मन्दिर में

भेंट अवश्य चढ़ा आओ। ऐसे कामों में देर करना ठीक नहीं।"

चन्द्रहास ससुर की आज्ञा को मानकर देवी को भेंट चढ़ाने चला।

उधर कुन्तलपुर के राजा ने सोचा कि मैं भी क्यों न चन्द्रहास से ही अपनी राजकुमारी का विवाह कर दूँ और उसे ही राज्य का उत्तराधिकारी बना दूँ। उन्होंने मंत्रीपुत्र मदन को आज्ञा दी कि तुम इसी समय चन्द्रहास को बुला लाओ। राजा की आज्ञा मिलते ही मदन अपने बहनोई को बुलाने दौड़ चला। चन्द्रहास देवी को भेंट चढ़ाने जाता उसे मार्ग में ही मिल गया।

मदन ने कहा—"आपके बदले मैं ही देवी के मन्दिर में भेंट चढ़ा आता हूँ। आप जल्दी से महाराज के पास जाइये। एक बहुत ही आवश्यक काम है।"

वास्तव में बात यह थी कि गालव मुनि और चम्पकमालिनी ने चन्द्रहास को पहचान लिया था। और गालव मुनि ने राजा को भी बता दिया था कि यह वही चन्द्रहास है जिसे आप गोद लेना चाहते थे। और जिसके साथ चम्पकमालिनी का विवाह करना चाहते थे।

इसलिए राजा ने अपने पुराने प्रण को याद कर, चम्पकमालिनी का विवाह उससे करने और उसी को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय किया था।

चन्द्रहास के पहुँचने से पहले ही विवाह और राजतिलक की पूरी तैयारी हो चुकी थी। इसलिये रात में विवाह और राजतिलक दोनों हो गए। इस जल्दी का एक कारण यह भी था कि कुन्तलपुर का राजा एकाएक संसार से विरक्त हो गया था और दूसरे ही दिन राज-काज चन्द्रहास को सौंपकर खुद संन्यास ले लेना चाहता था।

दूसरे दिन प्रात. जब धृष्टबुद्धि को पता लगा कि राजकुमारी का विवाह भी चन्द्रहास के साथ हो गया और वही राज्य का उत्तराधिकारी भी बन गया तो वह दौड़ा-दौड़ा देवी के मन्दिर में गया। चन्द्रहास ने जब देखा कि मेरे ससुर पागलों की तरह दौड़ते चले जा रहे हैं तो वह भी पीछे दौड़ पड़ा।

धृष्टबुद्धि ने मन्दिर में घुसते ही देखा कि मेरा पुत्र मदन मरा पड़ा है तो उसने भी प्राण दे दिये। पीछे से चन्द्रहास पहुँचा। उसने जब दोनों को मरा देखा तो मन में बहुत ही दुखी हुआ। वह भी अपने प्राण देने को तैयार हो गया। पर भगवती देवी ने प्रकट होकर उसे रोका। फिर उसकी प्रार्थना पर मदन और धृष्टबुद्धि को भी प्राणदान दिया।

सभी खुशी-खुशी वापस आए। जब चन्द्रहास राजसिंहासन पर बैठा तो चन्द्रहास की धाय राजसभा में आई। चन्द्रहास ने सिंहासन छोड़कर उसके चरण छुए। राजभक्त धाय की आँखों में आनन्द के आँसू बह निकले। उसने चन्द्रहास को कहा—"बेटा, आज का दिन बड़ा ही शुभ है। पर न जाने क्यों मुझे एक बात काँटे की तरह चुभ रही है। जब तक तुम अपने पिता का छिना हुआ राज्य शत्रुओं से वापस नहीं ले लेते तब

तक मेरे मन में चैन नहीं होगी। फिर धाय ने पिछली सारी कहानी उसे कह सुनाई।

चन्द्रहास ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता के राज्य को शीघ्र ही शत्रुओं से वापस लूँगा।

फिर उसने केरल राज्य पर धावा बोलकर अपने बाप-दादा का राज्य शत्रुओं से वापस लिया और तीन राज्यों का स्वामी बन गया।

वह जीवन भर धाय का माता की तरह मान करता रहा।

उसके राज्य-काल में प्रजा बहुत सुखी रही। वह सच्चा क्षत्रिय था। प्रजा को अपनी सन्तान की तरह पालता था। जहाँ वह बहुत बड़ा राजा बना, वहां पहुँचे हुए भगवान् के भक्तों में भी उसकी गिनती थी। वह कीचड़ में कमल की तरह रहकर निर्लेप भाव से राज्य करता था।

◇ ◇ ◇